<u>विकसित भारत संकल्प यात्रा में माननीय अध्यक्ष का उद्बोधन</u>

विकसित भारत संकल्प यात्रा में पधारे मेरे सभी परिवारजनों को मैं प्रणाम करता हूं। जिन्होंने आध्यात्मिक संस्कृति का पूरे विश्व में नेतृत्व किया; भारत के अध्यात्म, धर्म और संस्कृति को जिन्होंने दुनिया में पहुंचाने का काम किया, जिन्होंने देश के नौजवानों को अपने देश के प्रति समर्पण, सेवा, निडरता और संकल्प के साथ काम करने की प्रेरणा दी, वैसे हमारे स्वामी विवेकानन्द जी का भी आज जन्मदिन है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि एक दिन भारत का नौजवान विश्व का नेतृत्व करेगा, भारत का नौजवान दुनिया में अपने उत्कृष्ट कार्य से निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने संकल्प को पूरा करेगा। यही आह्वान आज भारत के प्रधान मंत्री जी ने किया है कि अगर हमें विकसित भारत बनाना है तो सबको मिलकर काम करना होगा, सामूहिकता के साथ काम करना होगा, सबके सहयोग से काम करना होगा और विकसित भारत बनाने के लिए सभी लोगों को अपने कर्तव्यों और दायित्वों को निभाना होगा, तभी हम भारत को विकसित भारत बनाएंगे और आज यह सपना पूरा होता दिख रहा है।

मेरे गांव के लोग भी आकांक्षी हैं। इस बदलते भारत में उन्हें भी ऐसा लग रहा है कि अब भारत बदलेगा, हमारा गांव आत्मनिर्भर होगा, हमारे गांव में जो मूलभूत सुविधाओं का अभाव था, उन अभावों को पूरा करने का काम मोदी जी करेंगे। इसीलिए, 'मोदी जी की गारंटी' वाली यात्रा की गाड़ी आपके गांव में आई है। ये सभी अधिकारी आपके गांव में दस्तक दे रहे हैं।

केन्द्र सरकार की जो योजनाएं हैं, राज्य सरकार की जो योजनाएं हैं और जिन लोगों को उन योजनाओं के बारे में जानकारी नहीं है, जो उसका लाभ लेने की पात्रता तो रखते हैं, लेकिन उसके लिए औपचारिकता पूरी नहीं कर पाते हैं, उन्हें आज इस विकसित भारत संकल्प यात्रा से सब कुछ समझने का मौका मिलेगा और उन योजनाओं का लाभ लेने का भी मौका मिलेगा। केन्द्र की बहुत सारी योजनाएं हैं, लेकिन उन योजनाओं का लाभ अभी तक गांव में नहीं मिल पाया है।

इसीलिए, मोदी जी ने कहा कि पूरे देश के अन्दर यह विकसित भारत यात्रा जाए, अधिकारी गांवों में जाएं, वहां लोगों को योजनाओं के बारे में बताएं और जो वंचित व्यक्ति है, जो गरीब व्यक्ति है और जो इस योजना

की पात्रता रखता है, लेकिन उसे उन योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है, उनको यहां ही उन योजनाओं का लाभ भी मिलेगा और अब तक जिन लोगों को योजनाओं का लाभ नहीं मिला है, वे सारी औपचारिकताएं पूरी करें, ताकि भविष्य में उन्हें सारी योजनाओं का लाभ मिले।

कुछ काम आज होंगे, कुछ एक साल बाद होंगे। हमारा काम और संकल्प पूरा करने में समय जरूर लगता है, लेकिन एक दिन यह संकल्प पूरा होगा, मेरा दृढ़-निश्चय है। इसीलिए, प्रधान मंत्री जी ने भी यही कहा है, आओ हम सब मिलकर भारत के लिए, देश के लिए काम करें, राष्ट्र के लिए काम करें। इस देश को आगे बढ़ाने में, नवनिर्माण में, आत्मनिर्भर बनाने में सबका योगदान है।

मैं गुडली आता हूं तो मुझे याद आता है कि गुडली की भिंडी हो, गुडली की सब्जी हो, दिल्ली, मुंबई तक बिकती है, लेकिन भाव नहीं मिलते हैं। मैं बहुत सालों से इंतजार कर रहा हूं कि यहां पर आसपास एक मंडी बनाने का काम करें। आज बैठकर अभी बात करूंगा। यहां से चलेंगे, थोड़ा आगे बढ़ेंगे और दिल्ली मुंबई रोड पर चढ़ेंगे, एक तरफ दिल्ली और दूसरी तरफ मुंबई, साढ़े चार घंटे में दिल्ली और सात घंटे में मुंबई, यहां के लोग सब्जी बेचकर शाम को घर लौट जाएंगे। साढ़े चार बजे चलेंगे, साढ़े आठ, नौ बजे दिल्ली, सामान बेचकर पांच बजे चलेंगे, साढ़े नौ बजे घर पर आ जाएंगे। अब यह नहीं कह रहा हूं कि भिंडी की जरूरत पड़ेगी। भिंडी हो, मटर हो, अभी मटर का मौसम है। मटर भी यहां की बिकती है। हिंडोली के पास की हमारी मटर प्रसिद्ध है। धीरे-धीरे यह आसपास के इलाके की एक बड़ी मंडी बन सकती है।

बड़ी मंडी विकसित होगी, तो निश्चित रूप से यहां के लोगों को बाजार मिलेगा, तो मार्केटिंग करने का मौका मिलेगा। हमारी महिलायें, धीरे-धीरे छोटे-छोटे काम करके, घर पर काम करके आत्मनिर्भर बनेंगी। धीरे-धीरे एक समय आएगा, जैसे सुपर बाजार में मटर लेने जाओगे तो सौ ग्राम का पैकेट इतने रुपये का आता है जितने में दस किलो मटर आ जाए। वह समय आएगा, जब यहीं मटर बनेगी, यहीं पैकिंग होगी और यहीं मटर का भाव तय होकर बाजार में बिकने लगेगा। मैं दंग रह जाता हूं।

मैं अभी कुछ दिन पहले एक मेले में गया था, जिसे महिलाओं ने लगाया था। महिलायें क्या क्या काम करती हैं? मैंने पूछा कि बेचती कैसे हैं, तो बोली ऑनलाइन।

यहां गुडली के पास एक, तालेड़ा के पास एक मटर का प्लांट है, जहां सब्जियां प्रोसैस होती हैं। आपके केशोरायपाटन में थोड़े दिन में यह लगने वाला है। एक बेटी ऐसे मटर बेचती हुई आई, मेरी पत्नी ने मटर खरीदी

तो बोली बहुत बढ़िया है। वह बरसात में भीग रही थी, मेरी पत्नी के पीछे पड़ गई। उसने कहा कि बरसात में भीग रही है, मटर लो। मेरी पत्नी ने पूछा कि कितना पैसा कमा लेती हो? उन्होंने कहा कि दो सौ, ढाई सौ, तीन सौ रुपये। वह मटर वहां से लेती है या उनको नियुक्त कर रखा है और वह मटर बेचती है। यह गांव कोटा बूंदी के नजदीक का गांव है।

यहां हम क्या ऐसी चीजें कर सकते हैं जिससे यहां की महिलाएं आत्मनिर्भर हो जाएं। घर बैठे सौ, डेढ़ सौ रुपये कमाने लग जाएं। यहां आंगनवाड़ी की महिलायें बैठी हैं, आजीविका मिशन की महिलायें बैठी हैं, सहयोगनी बैठी हैं, सेल्फ हेल्प ग्रुप है, ऐसे छोटे छोटे काम करने पड़ेंगे। मैं एक बार दीपावली पर गया तो मैंने देखा कि कोई चाइना का दीया नहीं खरीद रहा था। प्रजापति, कुम्हार का बनाया हुआ दीया लोग खरीद रहे थे। यह है परिवर्तन देश में। चाइना की लाइट को लगाते हुए आपने नहीं देखा होगा। भारत की लगी हुई लाइट को देख रहे थे।

रक्षा बंधन पर कच्ची बस्ती की बनी हुई, हमारी बेटियों की राखी को लोग खरीद रहे थे। यह विचार जब आने लग जाएगा कि मुझे मेरे भारत का बनाया प्रोडक्ट खरीदना है, तो दुनिया पलट जाएगी, क्योंकि भारत से बड़ा बाजार दुनिया में कोई नहीं है। हमारे से बड़ा कोई देश नहीं। हमसे डेमोक्रेसी में बड़ा कोई देश नहीं, नौजवानों में हमसे बड़ा कोई देश नहीं, आबादी की दृष्टि से हमसे बड़ा कोई देश नहीं और आने वाले समय में उद्योग और व्यापार में हमसे बड़ा कोई देश नहीं होगा।

एक समय था, जब सारी चीजें हम बाहर से मंगाते थे, अब समय आएगा, जब हम यहां माल बनाएंगे और दुनिया का माल भी बेचेंगे, यह हमारी ताकत है। मैनपॉवर के रूप में नौजवान हमारे पास है।

दुनिया में नौजवान नहीं हैं, दुनिया के बहुत बड़े विकसित देश में भी आप चले जाएं, 10 15 करोड़ की आबादी है, लेकिन वहां नौजवान ज्यादा नहीं हैं। मैं दक्षिण कोरिया गया था, मैंने पूछा तो पता चला कि युवा नौजवानों की आबादी खत्म हो गई, उनको नौजवान बाहर से मंगाने पड़ रहे हैं। हमारा नौजवान स्किल्ड होगा, पढ़ा लिखा होगा, दक्ष होगा, नये चिंतन और नये सोच का होगा।

गांव में बैठकर दुनिया को देखेगा और अपना जुनून पैदा करेगा कि मैं भी दुनिया के अंदर परिवर्तन कर सकता हूं। यह ताकत आज नहीं तो कल आएगी, आप परिवर्तन देखेंगे।

यहां महिलाएं बैठी हैं, 30 – 35 साल पहले आपके गांव में ए.एन.एम कौन होती थीं। केरल की महिलाएं होती थीं। यहां की लड़कियां एएनएम नहीं होती थीं, काम करने नहीं जाती थी। चालीस साल पहले किसी भी गांव में आप जाओ तो नर्सिंग स्टाफ केरल की होती थीं। क्यों होती थीं?

मैं देख कर दंग रह गया कि केरल के अलावा कोई नर्सिंग स्टाफ नहीं देखता था क्योंकि केरल में 80 साल पहले लोग सौ प्रतिशत पढ़ाई लिखाई करते थे इसलिए केरल की महिलाएं इतनी दूर चल कर हिन्दुस्तार के कोने कोने में पहुंच गईं। दुनिया के अधिकतर देश में केरल के लोग इसलिए जाते थे क्योंकि वे पढ़े लिखे थे। हमारी बच्चियां स्कूल कॉलेज जाती हैं, जिद करती हैं कि मुझे काम करना है, शादी नहीं करनी है, अपने पैरों पर खड़ा होना है, इस तरह से जिद करने लगी हैं, यही परिवर्तन है। इस परिवर्तन को प्रोत्साहन देना चाहिए।

मैं नौजवानों से आग्रह करता हूं, हम में बहुत बड़ी ताकत है, हमारे जैसे किसी का मस्तिष्क और दिमाग नहीं है, हमारे जैसे जुनून किसी में नहीं है।

हमारे जैसा किसी में आत्मविश्वास नहीं है। हम आध्यात्मिक और सांस्कृतिक लोग हैं। अभी गेट पर लोग मिल गए, उन्होंने कहा कि हम तीन सौ नौजवान भगवान राम के जन्मदिन पर इस गांव में भंडारा करेंगे। यह चिंतन है, यह सोच है। यह उनसे किसी ने नहीं कहा, उनको लगा कि गांव में आध्यात्मिक वातावरण बनेगा तो लोग सत्य पर चलेंगे, जिस गांव में जितना धर्म होगा, अध्यात्म होगा, लोग नैतिकता पर चलेंगे।

पहले धर्म था और नैतिकता ज्यादा थी। यह धर्म और नैतिकता भारत की संस्कृति का प्रतीक है इसलिए धर्म पर चलो। बड़े लोग कहते हैं कि धर्म भ्रष्ट हो गए हो क्या? नैतिकता समाप्त हो गई क्या? यह नैतिकता भगवान राम से आएगी, उनके जीवन से आएगी, उनके जीवन की सीख से आएगी।

भगवान राम अयोध्या में राजा थे, अगर उनको वनवास नहीं होता तो केवल अयोध्या के राजा रह जाते, लेकिन वनवास हुआ, चौदह साल तक वह गांव गांव, जंगल जंगल घूमें। वे पीड़ित शोषित, जिनके ऊपर अत्याचार हो रहा था, उन लोगों का उद्धार करते चले गए। अयोध्या के राजा भगवान राम हो गए।

जो अन्याय के खिलाफ लड़ेगा, अनैतिकता के खिलाफ लड़ेगा वही जीतेगा। सत्य कभी पराजित नहीं हो सकता, कभी नहीं हो सकता, कुछ समय के लिए विचलित हो जाएगा, लेकिन

अंततः जीत उसी की होगी।

मैं इस गांव में वर्षों से आ रहा हूं। हम बैठकर लंबे समय के लिए योजनाएं बनाएंगे, एक साल में क्या आवश्यकता है, दो साल लिए क्या आवश्यकता है, लेकिन परमानेंट काम हो। मैं सभी लोगों से निवेदन करूंगा कि क्वालिटी का काम करो, जितना पैसा आया उसका ठीक से उपयोग हो। गांव के लोगों को लगना चाहिए, जैसे हम जन प्रतिनिधि हैं, गांव का सरपंच भी जनप्रतिनिधि है।

उसकी गांव के विकास के लिए ज्यादा जिम्मेदारी हो जाती है। कोई नाली के बारे बताता था कि हम कहते थे कि गांव में सरपंच को बताओ, वह गांव में घूमता रहे, लोगों से मिलता रहे, बातचीत करता रहे, क्या काम करना है, कैसे काम करना है। आप निश्चित मानिए, मुरली गांव के स्कूल में कमरों की मांग की गई थी। आपको लेटर मिल गया न?

कमी तो हमेशा रहनी चाहिए। कमी की बात नहीं करेंगे, तो लक्ष्य कभी भी पूरा नहीं होगा। कमी होगी तो उसे पूरा करेंगे।

हम स्कूलों को बढ़िया बनाएंगे, ताकि हमारे बच्चे अच्छी शिक्षा और संस्कार प्राप्त कर सकें। अभी 10 लाख आया है, कितने रुपयों की और जरूरत है? 10 लाख और देते हैं, तो 20 लाख हो गए। आगे और देंगे।

सब गांवों को बांटना है। धीरे-धीरे सब गांवों को बांटा जाएगा। नेता को सभी की तरफ अपनी नजरें बराबर से रखनी चाहिए। एक गांव में आप सब दे देंगे, तो दूसरे गांव वाले चिल्लाएंगे।

अगली बार आएंगे तो किसी कंपनी वाले से कहकर 30 लाख और दिलवाएंगे। आप काम करते रहें।

भूपेन्द्र यादव जी के यहां से 10 लाख और यहां से 10। कुल हो गए बीस। अगले साल और करेंगे। खेल के मैदान के लिए भी मैं बात करूंगा। क्या एसडीएम यहां हैं? पटवारी और तहसीलदार को भी बुला लो। बिजली के इंजीनियर को भी बुला लो।

बिजली की कुछ लाइनें ऊपर जा रही हैं, जिसके बारे में लोगों ने मुझे बताया था। खेल के मैदान के लिए नौजवानों ने मुझसे मुलाकात की थी। आपका मन भी यह कहता है कि सही काम करो। हम बिल्कुल करेंगे।

आप सभी को धन्यवाद और राम राम।

अब हम लोग संकल्प लेंगे। सभी लोग खड़े हो जाएं और अपने हाथ खड़े कर दें। अब हम विकसित भारत का संकल्प लेंगे।

“मैं गर्व से, ‘हमारा संकल्प विकसित भारत’ की प्रतिज्ञा लेता हूं। हम शपथ लेते हैं कि भारत को वर्ष 2047 तक आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने के सपने को साकार करेंगे, गुलामी की मानसिकता को जड़ से उखाड़ फेंकेंगे, देश की समृद्धि और विरासत पर गर्व करेंगे, भारत की एकता को सुदृढ़ करेंगे और देश की रक्षा करने वालों का सम्मान करेंगे। देश का नागरिक होने के नाते मैं यह कर्तव्य निभाऊंगा।’

“भारत माता की जय॥”